International Journal of Home Science 2019; 5(3): 133-135

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2019; 5(3): 133-135
© 2019 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 04-07-2019
Accepted: 06-08-2019

गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

कामिनी जैन
प्राचार्य, शासकीय गृह विज्ञान
महाविद्यालय, होसंगाबाद,
मध्य प्रदेश, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, ईसीएम, गृह
विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर
आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक
विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश,
भारत

Correspondence
गुंजन दुबे
शोध छात्र गृह विज्ञान
मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)
विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश,
भारत

बालश्रम की बाध्यता के कारण एवं विभिन्न संगठनों द्वारा बालश्रम उन्मूलन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन

गुंजन दुबे, कामिनी जैन, नीलमा कुँवर

सारांश
हमारे देश में बालश्रम की समस्या काफी गंभीर है। बालश्रम से अभिप्राय यह है कि कोई एक बालक जब कार्य करता है तथा जिसके बदले में उसे कुछ प्राप्त होता है इसकी अवधारणा में मुख्य तीन तथ्य सामने आते हैं। प्रथम आर्थिक दृष्टि से बालकों से लंबे समय तक जोखिम भरा कठोर कार्य करवाकर उन्हें कम मजदूरी या भुगतान करना। दूसरा बालश्रम से व्यक्तितव का विघटन होता है। तीसरा यह एक सामाजिक बुराई है क्योंकि समाज में बाल श्रमिकों के व्यक्तित्व विघटन के परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक समस्यायें उत्पन्न होती हैं जो समाज के लिए हानिकारक है। यह रोजगार तत्कालीन जीवन में क्षुधा शान्ति अवश्य कर देता होगा परन्तु यही रोजगार बचपन की मौजमस्ती से बालक को वंचित रखता है। कार्य की कठोर और खतरनाक दशायें बच्चों के व्यक्तित्व में अनेक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकृतियों को जन्म देती है एवं विकसित करती हैं। कार्य अवधि, कठोर परिश्रम, अनुचित व्यवहार, बच्चों के मस्तिष्क और शरीर को प्रभावित करते हैं इस प्रकार बालश्रम बच्चों के व्यक्तित्व के विकास में गतिरोध उत्पन्न करता है। बालश्रम की यह सामाजिक समस्या प्रायः हर समाज में विद्यमान रहती है एवं कोई भी समाज इसके अस्तित्व को नकार नहीं सकता है।

कुट शब्दः बाध्यता, उन्मूलन, प्रयास

प्रस्तावना
बालश्रम की समस्या एक ज्वलंत अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। भारत में बाल अधिकारों की अनदेखी कर इनके शोषण की गंभीर समस्या देश में औद्योगिक क्रांति के समय से भयावह हुई है। तभी से उद्योगों में सस्ते श्रम के लिए मांग अत्याधिक बढ़ी है। अर्थ व्यवस्था में गरीबी, भुखमरी की स्थिति अति विस्फोटक होने से उद्योगों में बाल श्रमिकों की असीमित पूर्ति होने लगी। फलस्वरूप सेवायोजकों द्वारा बाल अधिकरों को नजर अंदाज करके बालकों से असीमित कार्य लिया जाने लगा तथा दूसरी ओर उनको समुचित पारिश्रमिक एवं सुविधायें न देकर उनका आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक शोषण किया जाने लगा। इसी तथ्य को मद्देनजर रखते हुए बालश्रम की बाध्यता दूर कर तथा उन तक उचित प्रयासों को पहुँचाना नितांत आवश्यक है ताकि बाल श्रमिक भी कष्ट रहित जीवन जी सकें।

उद्देश्य
- बाल श्रमिक की सामाजिक–आर्थिक पृष्टिभूमि का अध्ययन।
- बालश्रम की बाध्यता के कारणों का अध्ययन करना।
- विभिन्न संगठनों द्वारा बालश्रम उन्मूलन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का मूल्यांकन

अध्ययन पद्धति
शोध अध्ययन हेतु होशंगाबाद जिला का चुनाव किया गया है तथा 300 बाल श्रमिकों का चयन किया गया है जो होटल, कचरा बीनने वाले, गैरेज, कृषि, घरों और टेंट हाऊस में काम करने वाले थे। अध्ययन में चर अचर का इस्तेमाल किया गया है। साख्यिकीय विधियां 'टी' टेस्ट, प्रतिशत और सह–संबंध का चुनाव किया गया है।

परिणाम

सारिणी 1: बाल श्रमिक की आयु

क0सं0	आयु (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
1.	7 – 8	18	6.0
2.	9 – 10	36	12.0
3.	11 – 12	89	29.6
4.	13 – 14	157	52.3
	कुल	300	99.9

छोटी आयु की अपेक्षा बड़ी आयु में बाल श्रमिक अधिक संलग्न हैं साथ ही साथ यह विडम्बना है कि अभिभावक 6–7 वर्ष में ही अपने बच्चों को कार्य में संलग्न कर आर्थिक अर्जन को मजबूर कर रहे हैं जोकि समाज के लिए चिंतनीय पहलू है।

सारिणी 2: बालश्रम का कारण

क0सं0	बालश्रम का कारण	संख्या	प्रतिशत
1.	आर्थिक स्थिति	123	41.0
2.	पारिवारिक दबाव	67	22.3
3.	आस–पड़ोस का दबाव	49	16.ण
4.	अन्य	61	20.4
	कुल	300	99.9

बच्चों के आसपास का वातावरण बालश्रम को बढ़ावा देता है। यह नन्हें बच्चे लालच, मजबूरी, दोस्ती एवं दबाव के कारण काम करने को तैयार हो जाते हैं। मजबूरी में या कभी–कभी बाह्य दुनियां की तड़क–भड़क में फंसकर बच्चे अपना घर छोड़कर काम की तलाश में शहरों में जाते है और छोटे–मोटे कार्य करने लग जाते हैं। शोध अध्ययन में यह पाया गया कि 41.0 प्रतिशत बच्चे परिवार को आर्थिक स्थिति के कारण ही इसमें संलग्न हुए हैं वहीं 22.3 प्रतिशत पारिवारिक दबाव के चलते कार्य करने घर से बाहर आये, 16.3 प्रतिशत को आस–पड़ोस का वातावरण प्रेरित करके लाया वहीं 20.3 प्रतिशत अन्य कारणों से इसमें संलग्न हुए।

सारिणी 3: बालश्रमिकों की मजदूरी का प्रकार

क0सं0	मजदूरी का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1.	दैनिक	146	48.6
2.	साप्ताहिक	113	37.6
3.	मासिक	41	13.6
	कुल	300	99.8

कभी कभी परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण या माता–पिता के बीमार हो जाने पर उनकी जगह काम पर जाने, स्कूल के अवकाश में काम करने के लिए बच्चे तैयार रहते हैं। आंकड़ों से भी यही प्रस्तुत हो रहा है कि दैनिक कार्य करने वालों का प्रतिशत 48.6 है जो कि सर्वाधिक है। वहीं साप्ताहिक 37.6 प्रतिशत तो 13.6 प्रतिशत मासिक कार्य करने वाले हैं।

सारिणी 4: बाल श्रमिक के कार्य को समाज द्वारा सम्मान

क0सं0	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	22	7.3
2.	नहीं	278	92.6
	कुल	300	99.9

रामू, छोटू, चवन्नी आदि नामें से पहचाने जाने वाले बाल श्रमिक जो कि बड़े होकर किस नाम से पुकारे जायेंगे वे नहीं जानते हैं। गालियां, झिड़कियां आदि लगातार सहकर वह नहीं जाते हैं कि उन्हें सम्मानजनक स्थिति प्राप्त है कि नहीं। इन बातों का प्रभाव उन्हें कुछ समय तक तो विचलित करता है परन्तु इसकी आदत पड़ने पर इन बातों को भूलकर वह सेवचा में लग जाते हैं, आंकड़े बताते हैं कि 92.6 प्रतिशत बालश्रमिक मानते हैं कि उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं है। वहीं 7.3 प्रतिशत के अनुसार उन्हें सम्मान प्राप्त होता है।

सारिणी 5: शासकीय/अशासकीय संगठनों द्वारा बालश्रम उन्मूलन प्रयासों की जानकारी

क0सं0	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	9	3.0
2.	नहीं	291	97.0
	कुल	300	100.0

अनेकानेक योजनायें बालश्रमिकों के हित के लिए चलायी जा रहीं है। बालश्रमिकों को शासकीय/अशासकीय संगठनों द्वारा बालश्रम उन्मूलन प्रयासों की जानकारी है या नहीं तो 97.0 प्रतिशत ने बताया कि उन्हें इन प्रयासों की जानकारी नहीं है। वहीं 3.0 प्रतिशत बाल श्रमिकों ने बताया कि उन्हें इसकी जानकारी है किन्तु गरीबीवश उन्हें यह कार्य करना ही पड़ता है।

सारिणी 6: बालश्रम को कम करने में सबसे प्रभावी उपाय

क0सं0	उपाय	संख्या	प्रतिशत
1.	संचार साधन	62	20.6
2.	कानून	6	2.0
3.	जनप्रतिनिधि	21	7.0
4.	उपरोक्त सभी	211	70.3
	कुल	300	99.9

बालश्रम को जड़ से समाप्त करना न केवल भारत का बल्कि सम्पूर्ण विश्व की मुहिम है किन्तु इसमें सबसे पहले गरीबी सामने आ रही है। जैसा कि तेरह वर्षीय अफ्रीकी लड़की ने ये सवाल कुछ साल पहले ओस्लों में हुए अंतर्राष्ट्रीय बालश्रम सम्मेलन के मंच पर जाकर पूछा था कि यदि आप मेरी गरीबी खत्म नहीं कर सकते और मुझे शिक्षा उपलब्ध नहीं कर सकते तो मजदूरी करने के मेरे अधिकार की आलोचना करने या उसे बंद कराने का आपको क्या हक है? इस छोटी सी बालिका के इस सवाल ने बालश्रम की चिंता में जुटे सरकारी, गैर सरकारी और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की सक्रियता को झुठला दिया था। 70.3 प्रतिशत बालश्रमिकों ने बताया कि संचार साधन, कानून एवं जनप्रतिनिधि आदि सभी इसे समाप्त करने में अपनी मिली जुली भूमिका निभा रहे हैं, वहीं 20.6 प्रतिशत संचार साधनों को तो 7.0 प्रतिशत जनप्रतिनिधियों को और 2.0 प्रतिशत कानून को बालश्रम समाप्त करने का प्रभावी उपाय बताते हैं।

निष्कर्ष

बालश्रम एक ऐसी समस्या है कि उसमें सुधार तो किया जा सकता है लेकिन खत्म नहीं किया जा सकता। भारत में इतनी ज्यादा जनसंख्या बढ़ने के कारण बालश्रम तो पनपेगा ही क्योंकि सरकार सबको सरकारी नौकरी कैसे दे सकती है। गरीबी के कारण माँ–बाप भी बच्चों को इस दलदल में भेजने के लिए मजबूर हैं। विभिन्न संस्थाओं और संगठनों के प्रयास भी इसी कारण असफल हो रहे हैं। इससे बेहतर है काम के साथ–साथ वह पढ़ाई भी करें। जिससे वह आगे चलकर अच्छा कार्य कर सके।

सुझाव

एन0जी0ओ0 और सरकार को चाहिए कि जितने भी बच्चे बालश्रम की रोजी में आ रहे हैं उनके लिए शाम को निःशुल्क अतरिक्त स्कूल और प्रशिक्षण केन्द्र खोले जायें जिससे उनका कौशल विकास हो सके।

संदर्भ

1. Iversen V. Autonomy in child labour migrants. World Development, 2002, 30.
2. Jayaraj D. Labour force participation of children in rural India. Madras Institute of Development Studies, 1993. Working paper no. 116.